विनय से निर्मलता का विकास संभवः आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत ि-क्षक संसद ने उपकृत किए 16 लाख 50 हजार न-ामुक्ति के फॉर्म, समर्पण पुस्तक का विमोचन

आमेटः 1 फरवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-ास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने तपस्या के प्रकार में आंतरिक तपक ा एक प्रकार विनय को बताते हुए कहा कि विनय ऐसा गुण है, जिससे जीवन में निर्मलता का विकास और अहंकार का ना-ा होता है। मनुश्यों से विनय की आराधना का महत्व बताते हुए कहा कि अहंकारी व्यक्ति अपने विनय धर्म का ना-ा कर देता है तो उसे जनमानस में सम्मान की दृश्टि से नहीं देखा जाता।

आचार्यश्री ने उक्त विचार बुधवार को यहां अहिंसा समवसरण में श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आध्यात्म विद्या विनय का गुण विकसित करने वाली है, जबकि लौकिक विद्या आदमी के अहंकार का निमित्त नहीं बन सकती। विद्या के साथ विनय होने पर विद्या ःोभित होती है। विनीत व्यक्ति अभिवादन करने वाला होता है। वृद्धों की सेवा करने वाले का जीवन आयुश्य, विद्या, य-ा और बल में वृद्धि करने वाला होता है। इसलिए मनुश्य विनय धर्म का आसेवन करने का प्रयास करें। खडप्पन के गुणों को विकसित करने से व्यक्ति जीवन में बडा बनता है।

आचार्यश्री ने नमन खमन अरुदीरता, सबका आदर भाव, कहे कबीरा वही बडा, जाका बडा स्वभाव दोहे को प्रस्तुत करते हुए विनय-ीलता के संदर्भ में मुनि खेतसी स्वामी के विनय भाव का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि विनय जीवन में होने पर अनेक सात्विक गुणों का विकास भी जीवन में हो सकता है। अणुव्रत के जीवन में आने से व्यक्ति के जीवन में संयम आ जाता है। यह एक ऐसा आंदोलन है जिसके माध्यम से हम समाज का सर्वांगीन विकास करने की कल्पना को साकार कर सकते है। हमारा जीवन व्यसन मुक्त और चारित्रिक दृष्टि से अनुकूल होकर प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त हो सकता है। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के दिल्ली चातुर्मास के संदर्भ में आचार्यश्री ने कहा कि अणुव्रत की मूर्ति की स्थापना सुखलालजी के रुप में करने का प्रयास किया है और यह मूर्ति सचेतन चलने-फिरने वाली है। कार्यक्रम में मुनि सुखलाल, अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष भीखमचंद नखत, संरक्षक हीरालाल श्रीमाली एवं उपाध्यक्ष धर्मचंद अनजाना ने भी विचार व्यक्त किए। इस दौरान अणुव्रत ि-क्षक संसद की ओर से सोलह लाख पचास हजार न-ामुक्ति के फॉर्म उपहृत किए गए। कन्या मंडल आमेट की ओर से नवग्रह के आधार पर गुरुवर के व्यक्तित्व पर प्रस्तुति दी गई। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

समर्पण पुस्तक का विमोचन

आचार्यश्री ने प्रवचन के दौरान तेरापंथ धर्म संघ के :ाासनसेवी श्रावक स्व. कजोडीमल बोहरा के जीवन से जुडी पुस्तक समर्पण का विमोचन किया। पुस्तक को विमोचन के लिए तनसुख बोहरा, गजेन्द्र बोहरा, महेन्द्र बोहरा और हंसराज बोहरा ने आचार्यश्री के चरणों में प्रस्तुत किया। इस पुस्तक में कजोडीमल के जीवन वृतांत का उल्लेख है। वे सामाजिक परिवे-ा में एक आदरणीय पुरुश थे। उन्होंने मेवाड स्तर पर तेरापंथ समाज को सुसंगठित एवं संयमपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी थी।
भी मौजूद थे।